Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for PG 1, CC 3, unit 1

Topic:–हर्ष के समय हेनसांग का भारत-विवरण (Huien Tsing's Account of India during Harsha)

हर्षवर्द्धन के समय में विख्यात चीनी यात्री हेनसांग भारत आया था। बौद्धधर्म के विषय ये विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से 630 ई में वह भारत आया। भारत में वह करीब 644ई तक रहा। इस अवधि में उसने भारत के प्रमुख नगरों, बौद्ध केंद्रों, स्तूपों और महाविहारों का भ्रमण किया। वह हर्षवर्द्धन से भी मिला। चीन लौटकर उसने पाश्चात्य संसार के लेख (शी-यू-को) नामक पुस्तक में तत्कालीन भारतीय राजनीति, समाज, धर्म, आर्थिक आस्था, शिक्षा एवं साहित्य की प्रगति पर विस्तृत ढंग से लिखा। यद्यपि ह्वेनसांग या युवान-च्यांग का विवरण धार्मिक भावना से प्रभावित है, तथापि इससे उपर्युक्त विषयों पर महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्ति होती है।

राजनीतिक स्थिति - युवान-च्वांग के अनुसार हर्ष समस्त उत्तरी भारत का स्वामी था। उसने सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की। राजा प्रजा के हित में शासन करता था। वह प्रशासन में गहरी दिलचस्पी लेता था। जनता पर कर का भार अधिक नहीं था। बेगारी की प्रथा नहीं थी। सभी व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते थे। सरकारी अधिकारी जनता का शोषण नहीं करते थे। राजा स्वयं ही भ्रमण कर (बरसात के दिनों को छोड़कर) प्रशासन का निरीक्षण करता था। राज्य में अपराध कम होते थे तथा अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जाता था। यद्यपि मृत्युदंड नहीं दिया जाता था, परंतु गंभीर अपराधों के लिए अंग-भंग की सजा दी जाती थी। जनता की सुविधा के लिए सड़कों और सरायों का निर्माण करवाकर उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की गई, फिर भी डाकू सड़कों पर यात्रियों को लूटते थे। हेनसांग स्वयं ही अनेक बार डाकुओं से अपने प्राणों की रक्षा बड़ी कठिनाई से कर सका।

सामाजिक दशा-सातवीं शताब्दी का भारतीय समाज वर्ण और जातिप्रथा के आधार पर मंडित था। चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) में धार्मिक अनुष्ठानजनित पवित्रता थी। बाण अपना अधिकांश समय धार्मिक कार्यों में व्यतीत करते थे। क्षत्रिय निर्दोष, सरल, पवित्र, सीधे-सादे और मितव्ययी थे। वे दयालु और परोपकारी थे। क्षत्रिय राजन्यवर्ग के थे, जो सदियों से शासन करते चले आ रहे थे। व्यापारी वैश्य जाति के थे। शूद्र शिल्प और भृति के अतिरिक्त कुकर्म भी करते थे। कुछ क्षेत्रों (सिंघ) में शूद्र शासक भी होते थे। मतिपुर का राजा भी चीनी यात्री के अनुसार, शूद्र ही था। शूद्रों की अनेक उपजातियाँ भी थीं, जैसे निषाद, परवश, पुक्कुस इत्यादि। अस्पृश्य (अंत्यज) जातियों का उल्लेख भी ह्वेनसांग करता है। ऐसी

जातियों में चांडाल, मलय (भरे हुए जानवरों को खानेवाला), स्रपक (कुत्ते खानेवाला), कसाई, जल्लाद आदि प्रमुख है। अस्पृश्यता की भावना बलवती थी। चीनी यात्रीका कथन है कि चंडाल, मेहतर आदि अछूत जातियां नगर के बाहर ऐसे मकानों में रहती थी जिन्हें विशेष चिन्हों से पहचाना जाता था।उनका स्पर्श और संसर्ग वर्जित था।

विवाह सामान्यतः सजातीय होते और प्रतिलोम विवाह भी होते थे। ये। अंतर्जातीय विवाहों पर प्रतिबंध था, परंतु बात थीं। उच्च वर्ग को स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करती थीं। उनके बीच प्रदा-प्रथा नही थी। सिर्फ वैश्य और शुद्र स्त्रियाँ ही पुनर्विवाह करती थीं। विधवाएँ श्वेत वस्त्र धारण करती थी। नगरों के वेश्याएँ (गणिकाएँ) भी होती थी। जनसाधारण का जीवन सादा और सात्विक था, परंतु नगरों और राजसभाओं में विलासिता थी। लोगों के वस्त्र सादे परंतु सुरुचिपूर्ण होते थे। सूती, रेशमी और ऊनी पत्रों का व्यवहार होता था। पुरुष टोपियों पहनते थे। दाँतों को काले या लाल रंग से रंगा आता था। मांस, मदिरा, लहसुन, प्याज आदि का उपयोग बहुत कम होता था, परंतु क्षत्रिय एवं शुद्र मादक द्रव्यों का सेवन करते थे। दूध, घी, मक्खन, शक्कर, चावल, रोटी उनके मुख्य भोज्य पदार्थ थे। धनी वर्गवाले नगरों में भव्य भवनों में रहते थे, परंतु गरीबों के पर घास-फूस से बने रहते थे। स्त्री-पुरुष आभूषण पहनते थे,परंतु पैरों में चप्पल पहनने का रिवाज बहुत कम था। स्वच्छता और पवित्रता पर बल दिया जाता था। खाने के पूर्व हाथ मुंह धोना आवश्यक था। खाने के बाद दातुन से मुँह धोया जाता था। भारतीय बासी या जूठा भोजन नहीं करते थे। वे सुगंधित इत्र का व्यवहार करते थे। पुत्र की उत्पत्ति पर उत्सव मनाए जाते थे। शतरंज, पासा खेलना तथा नाटक देखना मनोरंजन के मुख्य साधन थे। मृतकों को शवदाह जल-विलयन और खुले छोड़ देने की प्रथा थी।

हेनसांग भारत के विभिन्न भागों के लोगों की चारित्रिक विशेषताओं के संबंध में भी लिखता है। उसके अनुसार काश्मीरनिवासी धोखेबाज और कायर थे। मथुरा विद्वता और नैतिक आचरण के लिए विख्यात था। थानेश्वर 'अभिचार-क्रिया' के लिए तथा कन्नौज 'परिष्कृत जीवन' के लिए प्रसिद्ध था। मालवावाले विद्वान एवं विनम्र स्वभाव के तथा मगधवासी विद्वानों का आदर करनेवाले थे। कामरूप के लोग ईमानदार, मगर उग्र प्रवृत्ति के थे। उड़ीसा, आंध्र और धान्यकटक वाले भी उग्र स्वभाव के थे। महाराष्ट्री अभिमानी, परंतु पीड़ितों के सहायक तथा पुण्डुवर्धनवाले विद्वानों की कद्र करनेवाले थे।